

## बूढ़ा आदमी युवा पत्नी और चोर-पंचतंत्र

किसी ग्राम में किसान दम्पती रहा करते थे। किसान तो वृद्ध था पर उसकी पत्नी युवती थी। अपने पति से संतुष्ट न रहने के कारण किसान की पत्नी सदा पर-पुरुष की टोह में रहती थी, इस कारण एक क्षण भी घर में नहीं ठहरती थी। एक दिन किसी ठग ने उसको घर से निकलते हुए देख लिया।

उसने उसका पीछा किया और जब देखा कि वह एकान्त में पहुँच गई तो उसके सम्मुख जाकर उसने कहा, “देखो, मेरी पत्नी का देहान्त हो चुका है। मैं तुम पर अनुरक्त हूँ। मेरे साथ चलो।”

वह बोली, “यदि ऐसी ही बात है तो मेरे पति के पास बहुत-सा धन है, वृद्धावस्था के कारण वह हिलडुल नहीं सकता। मैं उसको लेकर आती हूँ, जिससे कि हमारा भविष्य सुखमय बीते।” “ठीक है जाओ। कल प्रातःकाल इसी समय इसी स्थान पर मिल जाना।”

इस प्रकार उस दिन वह किसान की स्त्री अपने घर लौट गई। रात होने पर जब उसका पति सो गया, तो उसने अपने पति का धन समेटा और उसे लेकर प्रातःकाल उस स्थान पर जा पहुँची। दोनों वहाँ से चल दिए। दोनों अपने ग्राम से बहुत दूर निकल आए थे कि तभी मार्ग में एक गहरी नदी आ गई।

उस समय उस ठग के मन में विचार आया कि इस औरत को अपने साथ ले जाकर मैं क्या करूँगा। और फिर इसको खोजता हुआ कोई इसके पीछे आ गया तो वैसे भी संकट ही है। अतः किसी प्रकार इससे सारा धन हथियाकर अपना पिण्ड छुड़ाना चाहिए। यह विचार कर उसने कहा, “नदी बड़ी गहरी है। पहले मैं गठरी को उस पार रख आता हूँ, फिर तुमको अपनी पीठ पर लादकर उस पार ले चलूँगा। दोनों को एक साथ ले चलना कठिन है।”

“ठीक है, ऐसा ही करो।” किसान की स्त्री ने अपनी गठरी उसे पकड़ाई तो ठग बोला, “अपने पहने हुए गहने-कपड़े भी दे दो, जिससे नदी में चलने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी। और कपड़े भीगेंगे भी नहीं।”

उसने वैसा ही किया। उन्हें लेकर ठग नदी के उस पार गया तो फिर लौटकर आया ही नहीं। वह औरत अपने कुकृत्यों के कारण कहीं की नहीं रही।

सीख : अपने हित के लिए गलत कर्मों का मार्ग नहीं अपनाना चाहिए।

## गुण गुणभी वृत्त पड़ी छर गेर-पंगुंडु

किमी गृभ में किमान रूढ़ी रूढ़ करतुं च। किमान उं वृद्ध घा  
पर उमकी पड़ी वृवती घी। मपने पति मे मंडुद्ध न रूढ़ने के कार  
किमान की पड़ी मरु पर-पुरुष की ऐरु में रूढ़ती घी, उम कार  
एक रू छी अर में नलीं ०रूढ़ती घी। एक दिन किमी ०ग ने  
उमके अर मे निकलतुं करु टोप लिया।

उमने उमका पीछा किया छर एर टोपा कि वरु एकानु मे  
पहुँच गरीं उं उमके मभूप एकर उमने करु,  
“दोपे, मेरी पड़ी का टोकातु के एका कै। मे उम पर मनुकरुं ऊं।  
मेरे भाष गले।”

वरु वेली, “घटि जिमी की गतु कै उं मेरे पति के पाम गुरु-भा  
एन कै, वृद्ध वभू के कार  
वरु फिलहुल नलीं मकडा। मे उमके  
लेकर मुडी ऊं, एममे कि रुभारा रुविधु मापमघ गीउं।”  
“दीक कै एडा। कल पूउःकाल उमी मभघ उमी भून पर मिल  
एना।”

उम प्रकार उम दिन वरु किमान की भूी मपने अर लौए गरीं। गतु  
कैने पर एर उमका पति मे गया, उं उमने मपने पति का एन  
मभए छर उमे लेकर पूउःकाल उम भून पर ए पहुँगी। ऐने  
वरुं मे गल टोपा। ऐने मपने गृभ मे गुरुट एर निकल मुए च  
कि उही भाज मे एक गरुगी नलीं मु गरीं।

उम मभघ उम ०ग के मन मे विचार मुया कि उम छरउ के मपने  
भाष ले एकर मे हु करुंगा। छर दिन उमके पिण्डु रुमु कैरे

उभके पीछे मु गघा डे वैमे ही मंकए ली कै। मउः किभी प्रकार उभमे  
 भाग एन रुषियाकर मपना पिः कुराना एाफिर। वरु  
 विमार कर उभने कर, “नमी गरी गरुगी कै। परले मै गंगी  
 के उभ पार राप मुउ रुं, छिर दुभके मपनी पी० पर लाकर  
 उभ पार ले एलंगा। ऐने के एक भाष ले एलना कठिन कै।”  
 “ठीक कै, रिभा ली करो।” किमान की भी ने मपनी गंगी उभे  
 पकरां डे ०ग गैला, “मपने परने कर गरुने-कपरे ही टै टै,  
 एभमे नमी मै एलने मै किभी प्रकार की कठिनं नलीं देगी।  
 एर कपरे हीगंगे ही नलीं।”

उभने वैभा ली किय। उने ले कर ०ग नमी के उभ पार गघा डे  
 छिर लोएकर मुघा ली नलीं।  
 वरु एरउ मपने कुकुट्टे के कार कलीं की नलीं रली।

भीप : मपने छिउ के लिए गलउ कने का भाज नलीं मपना न  
 एाफिर।

मनुवाए - कुलमीप एर